(3) अवलोकन प्रविधि

[OBSERVATION TECHNIQUE]

अवलोकन ज्ञानार्जन का वह सुबोध एवं प्रभावशाली साधन है, जिसके द्वारा छात्र स्वयं क्रियाशील रहकर किसी वस्तु या तथ्य का पता लगा सकता है। जो ज्ञान बालक अवलोकन के द्वारा प्राप्त करता है, वह स्थाई होता है।

वाणिज्य शिक्षण में अवलोकन प्रविधि द्वारा जीवन के निकट सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता मिलती है। अवलोकन द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान ठोस और स्पष्ट होता है। वास्तव में, अवलोकन द्वारा वाणिज्य का प्रयोगात्मक ज्ञान प्राप्त हो जाता है। यद्यपि यह प्रविधि अध्यापक वर्ग कम ही उपयोग में लाते हैं, तथापि इस प्रविधि द्वारा वाणिज्य शिक्षण में बड़ी सुगमता होती है।

इस प्रविधि में अध्यापक को छात्रों को ऐसी परिस्थिति में ले जाना चाहिये जहाँ उन्हें वाणिज्य के सिद्धान्तों का व्यावहारिक रूप दिखाया जा सके। जैसे, किसी बाजार का निरीक्षण कराकर छात्रों को आयात-निर्यात, उपभोक्ताओं की माँग की पूर्ति आदि की व्यावहारिक और प्रयोगात्मक दोनों प्रकार की शिक्षा दी जा सकती है। इस प्रविधि के प्रयोग में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है—

(1) बालकों के मानसिक स्तर का ध्यान रखकर उन्हें बाजार या और किसी औद्योगिक स्थान का अवलोकन कराना चाहिये।

(2) जिन स्थानों या उद्योगों का अवलोकन कराया जाये, उसे छात्रों के दैनिक जीवन से भली प्रकार से सुसम्बद्ध होना चाहिये ताकि वे उसकी उपयोगिता को सरलतापूर्वक समझ सकें।

Scanned by TapScanner

(3) स्वाभाविक ढंग से पहले ही बताए जाने वाले सिद्धान्तों को निश्चित करके उसकी रूपरेखा तैयार करना चाहिये ताकि समय पर किसी प्रकार कठिनाई का सामना न करना पड़े।

(4) अवलोकन के समय छात्रों को उचित प्रविधि से निर्देशित करते जाना चाहिये तथा उस विषय के आर्थिक पहलू को भी समझाते जाना चाहिये।

वाणिज्य के अनेक प्रकरणों में यह शिक्षण-प्रविधि उपयोगी तथा लाभप्रद है। उदाहरणार्थ कारखाना-उद्योग के मूलभूत सिद्धान्तों को समझाने में यह विधि उपयोगी हो सकती है। किसी कारखाने का अवलोकन कराकर, भूमि, पूँजी, श्रम, संगठन और साहस तथा आयात-निर्यात आदि विभिन्न सिद्धान्तों को समझाया जा सकता है।

(4) कथन प्रविधि

[NARRATION TECHNIQUE]

विषय-वस्तु के संगठन के अभाव में अज्ञानतावश या सम्बन्ध-बद्धता के अभाव में जब छात्र अध्यापक द्वारा पूछे गये प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाते या किसी तथ्य को उचित मात्रा में नहीं समझ पाते हैं, तब अध्यापक कथन का सहारा लेता है। कथन के द्वारा अध्यापक छात्रों के लिए विषय-वस्तु का संगठन करता है, उसके पूर्व ज्ञान का नवीन ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करता है तथा उन्हें नवीन ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रविधि के द्वारा छात्र पर्याप्त मात्रा में ज्ञान अर्जित करते हैं। छात्रों की रुचियों तथा उनकी सीखने की प्रक्रिया को इस प्रविधि के द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। कथन का मुख्य लक्ष्य छात्रों को किसी अप्रत्यक्ष वस्तु का ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रविधि के द्वारा वर्णित वस्तु या सामग्री को सरल, सुगम, स्पष्ट तथा सुबोध बनाया जा सकता। प्रत्येक बात या तथ्य को प्रश्नों द्वारा छात्रों से नहीं निकलवाया जा सकता। अत: प्रश्नोत्तर प्रविधि की पूर्ति 'कथन' द्वारा की जाती है। जब न प्रश्न पूछने से तथा न व्याख्या करने से हमारा मंतव्य सफल होता है, तब उस समय कथन हमारी सहायता करता है। सामाजिक विषयों के शिक्षण में इस प्रविधि का प्रयोग बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है। वाणिज्य के शिक्षक को इस प्रविधि का कुशलता एवं सतर्कता के साथ प्रयोग करना चाहिये। अध्यापक को इस प्रविधि का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये—

(1) कथन छात्रों की आयु तथा मानसिक स्तर के अनुसार होना चाहिये तथा शिक्षक कथन करते समय उनके अवधान विस्तार का ध्यान रखे।

(2) कथन अधिक लम्बे न हों तथा शिक्षक को उनके बाहुल्य पर भी रोक लगानी चाहिये।

(3) कथन की भाषा-शैली छात्रों के मानसिक स्तर तथा आयु के अनुकूल होनी चाहिये।

(4) कथन आवश्यकता अनुभव होने पर ही दिया जाना चाहिये।

Scanned by TapScanner

(5) कथन करते समय शिक्षक को प्रश्नोत्तर प्रविधि तथा सहायक सामग्री का भी उपयोग करना चाहिये।

(6) कथन को विभिन्न उपायों जैसे सहायक सामग्री, श्यामपट, कार्य प्रश्न आदि की सहायता से अधिक से अधिक रोचक बनाया जाना चाहिये।

(5) परीक्षा प्रविधि

[EXAMINATION TECHNIQUE]

यह प्रविधि पाठ्यक्रम से समस्त विषयों के शिक्षण में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसके द्वारा छात्रों के द्वारा अर्जित ज्ञान की परीक्षा ली जाती है कि उसने पठित सामग्री को किस सीमा तक आत्मसात् कर लिया है। शिक्षक इसके प्रयोग में लिखित तथा मौखिक प्रश्नों की सहायता लेता है। इसका सबसे प्रमुख लाभ यह होता है कि शिक्षक को अपने पाठ की सफलता का ज्ञान हो जाता है तथा छात्र भी अपनी कमियों की जानकारी प्राप्त कर लेता है। इस प्रविधि को प्रयोग में लाते समय वाणिज्य के अध्यापक शिक्षक को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिये—

(1) प्रश्नों में अधिकाधिक वस्तुनिष्ठता लानी चाहिये।

(2) प्रश्न सरल भाषा में प्रस्तुत किये जाने चाहियें। इसके अतिरिक्त प्रश्न संक्षिप्त, नपे-तुले एवं निश्चित हों।

(3) प्रश्न प्रस्तावित पाठों के अधिकाधिक क्षेत्र पर आधारित होने चाहियें; अर्थात् कुछ मुख्य पाठों पर आधारित नहीं हों वरन् उनका क्षेत्र विस्तृत हो।

(4) छात्रों की कठिनाइयों एवं अशुद्धियों को दूर करना चाहिये। इसके लिये शिक्षक को उनकी पुस्तिकाओं में टिप्पणी लिख देनी चाहिये।

(5) प्रश्नों का अंकन निष्पक्ष भाव से किया जाना चाहिये अर्थात् उसमें पक्षपात के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

(6) नाटकीय अथवा अभिनयीकरण प्रविधि

[DRAMATISATION TECHNIQUE]

इस प्रविधि के द्वारा छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जाता है। यह प्रविधि बहुत-से विषयों के साथ सह-सम्बन्ध स्थापित करने के अवसर प्रदान करती है। यह छात्रों को टीम भावना तथा नागरिकता के प्रशिक्षण के लिए बहुत-से अवसर प्रदान करती है। इसका बहुत ही सामाजिक महत्व है। यह एक सहयोगी कार्य है, जो छात्रों में सहयोग तथा सामाजिक समझदारी विकसित करता है। इनमें अभिप्राययुक्त समन्वय निहित है। इसमें छात्र क्रियाशील रहते हैं। यह बालकों की इन्द्रियों को शिक्षित एवं प्रफुल्लित करती है। इसके द्वारा विषय-ग्राह्यता, आत्मविश्वास तथा आत्माभिव्यंजना

Scanned by TapScanner

शक्ति विकसित होती है। इसके द्वारा छात्रों की झिझक तथा संकोच की प्रवृत्ति को कम किया जाता है। छात्र बोलने की कला (Art of Speaking) को भी सीख लेते हैं।

वाणिज्य का शिक्षक कुछ पाठों को इस प्रविधि की सहायता से सरल एवं सुबोध ढंग से पढ़ सकता है। उदाहरणार्थ—बाजार, ग्रामीण समस्यायें, विनिमय आदि। शिक्षक इसके द्वारा छात्रों को स्वक्रिया द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक अवसर प्रदान कर सकता है।

ब्राउन (Brown) ने अभिनय के निम्नलिखित तीन ढंगों का उल्लेख किया है—

(A) नाटकीय अभिनय प्रणाली (Dramatic Role Play)—इसमें छात्र नाटक की भाँति अभिनय करता है।

(B) आशु अभिनय (Extemporeous Role Play)—इसमें शिक्षक नाटक की भाँति सभी सुविधायें उपलब्ध कराता है, परन्तु छात्र को उसके द्वारा खेली जाने वाली भूमिका का पूरा निर्देश नहीं देता है। छात्र को यह तो बता दिया जाता है कि उसको किसका अभिनय करना है, परन्तु अभिनय किस प्रकार किया जायेगा, इसके सम्बन्ध में छात्र को पूरी छूट दी जाती है।

(C) हठात् अभिनय (Surprise Role Play)—इसमें छात्रों को उनकी भूमिकाओं के बारे में पहले से बता दिया जाता है, परन्तु कक्षा में एकाएक उन्हें अभिनय के लिए बुला लिया जाता है।

वाणिज्य-शिक्षक को अभिनय का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(1) अभिनय का प्रकरण सरल एवं स्पष्ट होना चाहिए।

(2) पात्रों की संख्या पाँच से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(3) अभिनय करने वाले छात्रों को उनकी कार्य-स्थिति तथा अन्य आवश्यक बातों से अवगत करा देना चाहिए।

(4) अभिनय के बारे में छात्रों को सामान्य जानकारी करा देनी चाहिए।

(5) कक्षा-अभिनय 10 से 15 मिनट से अधिक नहीं होना चाहिए।

Scanned by TapScanner